हो। तुम बच्चे यहाँ कोई योग वा याद सीखने लिए नहीं आये हो। यहाँ तुम आते हो सन्मुख मुरली सुनने। मुरली बहुत प्यारी लगती है। याद तो तुम कहाँ बैठ भी कर सकते हो। स्टूडेन्ट के इम्तिहान का जब टाइम होता है तो कहाँ भी बैठे होंगे बुधि में इम्तिहान की बातें ही आती रहेंगी। यह तुम्हारा योग और पढ़ाई इकट्ठी है। पढ़ाने वाले को भी याद करना पड़े। बाप कहते है मामेकम् याद करो। भूल से कृष्ण का नाम डाल दिया है। सन्यासी आदि तो कृष्ण को याद नहीं करते। बाकी किसने कहा मनमनाभव? तत्व वा ब्रह्म तो नहीं कह सकता। बाप इस मुख का आधार ले कहते हैं लाडले बच्चे मामेकम् याद करो। कृष्ण कैसे कहेगा? कृष्ण की आत्मा किसमें प्रवेश हो कहे वह भी नहीं हो सकता। यह सब प्वाइन्ट बुधि में धारण करनी होती है। फिर समझाना है कांग्रेसी लोग कितना आवाज से बोलते थे। उन्हों का लीडर था बापू जी। वह भी जिस्मानी बापू जी। यह है रूहानी। सब का बापू गाँधी तो हो न सके। शिवबाबा तो सबका बाप है ना। ब्रह्मा भी बाप है जरूर परन्तु इस समय सिर्फ तुम जानते हो- सारी दुनिया नहीं मानेंगी। क्योंकि समझती नहीं। यहाँ हम बापू जी निराकार शिवबाबा को कहते हैं। वह सभी का बाप है। बच्चों को कितनी प्वाइन्टस समझाते हैं। कब आत्मा पर, कब परमात्मा पर, कब शास्त्रों पर। ढेर के ढेर भारत में शास्त्र हैं। और धर्म वालों का तो एकही शास्त्र होता है- यहाँ तो जो घर से रुठे वह शास्त्र बनाते रहते। फालोवर्स लोग भी जो सुनते वह सत सत कहते रहते हैं। एमआबजेक्ट कुछ भी नहीं। जैसे राधा स्वामी पंथ है। अब नाम रखा है राधा स्वामी, राधे का स्वामी तो कृष्ण है। भारतवासी कुछ भी समझते नहीं। वास्तव में तो जिस रुप से भारतवासी कृष्ण को समझते हैं, वह है नहीं। राधा कुमारी है, कृष्ण कुमार। तो कृष्ण स्वामी कैसे कहेंगे। जब स्वयंवर बाद ल०ना०बनें तब स्वामी कहा जाए। छोटे पन में तो आपस में खेलपाल करते हैं; तो वह कोई पक्का स्वामी थोड़ेही हुआ। बहुत है जो सगाई को भी तोड़ देते हैं। अब ल०ना०तो दिखाते हैं परन्तु नारायण के बाप का नाम क्या है? कभी बतला न सके। कृष्ण के माँ बाप दिखाते है, राधे और कृष्ण दोनो के माँ बाप अलग2 हैं। राधे और जगह की थी कृष्ण और जगह का था। सतयुग की बातों का सारा अगडम बगडम कर दिया है। ल०ना० के बाप का नाम कहाँ? नारायण का बर्थ डे कहाँ है? यह कोई भी नहीं जानते। कि राधे कृष्ण ही फिर ल०ना०बनते हैं। बाप कहते हैं भक्ति मार्ग की कितनी बड़ी सामग्री है। ज्ञान में तो सिर्फ बीज को जानना होता है। बीज के ज्ञान से सारा झाड आ जाता है। तुम जानते हो ऊँच ते ऊँच भगवान है जो परमधाम में रहते हैं। वहाँ सबआत्मायें रहती हैं। सूक्ष्मवतन में तो है सिर्फ ब्र०वि० शं०और कोई है नहीं। वास्तव में ब्रह्मा विष्णु शंकर को देव देव महादेव कहते है। क्योंकि शिव के बाद है शंकर। ब्रह्मा और विष्णु पुनर्जन्म में आते हैं। बाकी शंकर नहीं आता। जैसे शिवबाबा सूक्ष्म है वैसे शंकर भी सूक्ष्म हैं। तो उन्हों ने शिव शंकर इकट्ठा कर दिया है। परन्तु है तो अलग2- शिव परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना, शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। ब्रह्मा सो विष्णु हो जाता है। ब्रह्मा सरस्वती सो ल०ना०बनते हैं। ततत्वम्। तुम भी देवी देवता घराने के हो ना। बाप तो सब राज समझाते रहते हैं। धारण करने वाले नम्बरवार हैं। जिसने जो पद कल्प पहले पाया है वही पुरुषार्थ चल रहा है। पुरुषार्थ बिगर प्रालब्ध बन न सके। पुरुषार्थ से समझा जाता है कल्प पहले भी इसने इतना किया था। अभी तुम्हारी पढ़ाई चल रही है रूद्र माला विष्णु की माला गाई जाती है। बाकी ब्रह्मा की माला है नहीं। क्योंकि पुरुषार्थी हैं। आज अच्छा चलते हैं कल माया का घूसा लग पड़ता है। रूद्र माला बनने से फिर ट्रन्सफर हो जावेंगे। ब्राह्मण पुरुषार्थी हैं। आज अच्छे कल गिर पड़ते तो माला बन न सके। आगे माला बनाते थे फिर 3-4 नम्बर में आने वाले आज है नहीं। यह युद्ध का मैदान है ना। कुछ भी बात समझ में न आये तो पूछो क्योंकि तुमको औरों को समझाना है। कुछ हैं जो मूँझ पड़ते हैं। ब्राह्मणियों में भी नम्बरवार हैं। कोई कोई पूछते भी हैं कि बाबा को कैसे